शब्द माला

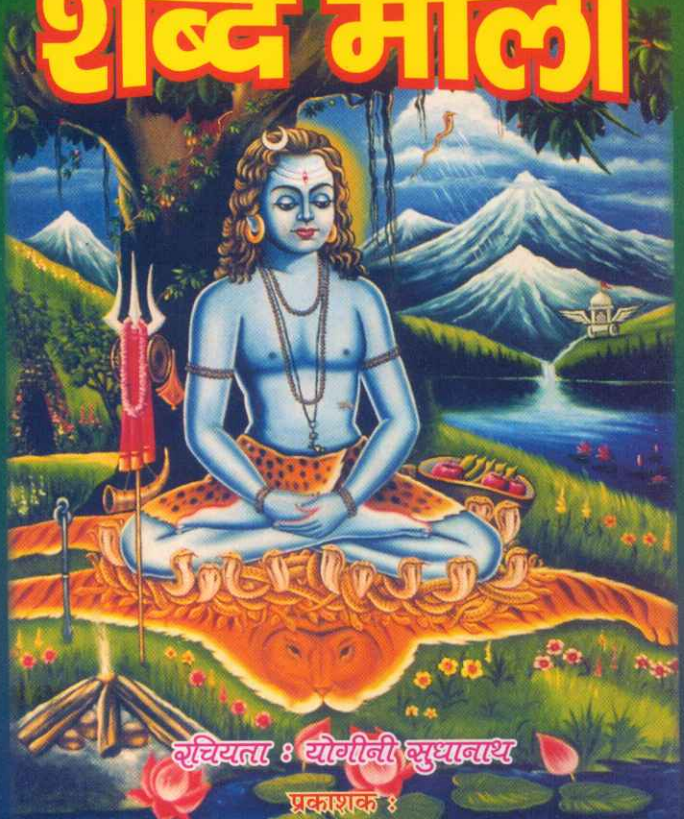

रचियता : योगीनी सुधानाथ

प्रकाशक :

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार

समर्पण

वन्दना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरू देवोमहेश्वरः।
गुरू साक्षात् परब्रह्मः तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

श्री परमश्रद्धेय ब्रह्मलीन अनन्त श्री विभूषित

1008 अवधूत योगी बाबा आनन्दनाथ जी

(पूर्व महामंत्री)

महाराज के श्री चरणों में यह शब्द माला समर्पित।

योगिनी सुधानाथ

ॐ शिव गोरक्ष योगी

शब्द माला

रचियता :

सुधानाथ

प्रकाशक :

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

फोन-01334-226583

प्रथम संस्करण-2000] (मूल्य : 10/-) [सन् 2011

।। आशीर्वाद ।।

प्रिय योगीनी सुधानाथ

सम्प्रेम शुभ आशीर्वाद

आपका यह काव्यलेखन 'शब्दमाला' देखकर बड़ा हर्ष होता है कि आपने नाथ योग सनातन धर्म को उजागर करते हुए ब्रह्म ने पिंड में ब्रह्माण्ड को प्रगट किया है। जिससे आत्म साक्षात्कार की प्रचिती का अहसास होता है।

आशा करते हैं कि नाथ सम्प्रदाय के साधु-संत योगेश्वरों को तथा अनेक भक्तों को अपने भजन तथा सत्संग करने में उपयोगी सिद्ध होगा।

आपका यह कार्य आपके ज्ञान तथा विद्वता पर प्रकाश डालता है। यह सब प्रशसंनीय है। अतः हम शुभ आशीष देते हुए धन्यवाद देते हैं।

गुरु गोरक्षनाथ जी की कृपा से आपको कार्य में सफलता प्राप्त हो।

शुभकामना

योगी प्रमोदनाथ

योगी प्रमोद नाथ

महामंत्री

योगी महासभा

।। आशीर्वाद ।।

प्रिय योगीनी सुधानाथ

शुभ आशीर्वाद

आपकी यह शब्दमाला की रचना देखते हुये यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि आत्मा परमात्मा, सत्गुरु शिष्य तथा भक्त मठ मन्दिरों में होने वाले सत्संग तथा जन कल्याण उपदेश से सब ओत-प्रोत हो रहे हैं जिसका अत्यधिक लाभ नाथ सम्प्रदाय के साधु-सन्तों को होगा।

ज्ञान शब्दों को सुचारू बद्ध काव्य में रचना करके आपने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। आपने 'शब्दमाला' में नाथ सम्प्रदाय योग प्रणाली पर आधारित जीव को ब्रह्म मय बनाने की कोशिश की है। अत: यह कार्य सराहनीय है।

आपके इस कार्य के प्रति मेरी अगिक शुभकामना है। आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास के साथ गुरु गोरक्षनाथ जी की अनुकम्पा से आपका प्रयास सफल होता रहे।

योगी विलासनाथ

योगी विलासनाथ

प्रचार प्रसार अध्यक्ष

योगी महासभा

।। मनोगत ।।

परम वन्दनीय 1008 सिद्ध योगी सद्गुरु देव बाबा आनन्द नाथ जी (महामंत्री) के चरणारविन्द में सत नमो आदेश। जिनकी सद्प्रेरणा एवम् शुभ आशीर्वाद से (लघु शब्द माला) प्रस्तुत करने का मुझे सौभाग्य मिला श्री नाथ सम्प्रदाय अनादि काल से चला आ रहा है अधिकांश मठ, मन्दिर, आश्रम और डेरो में सत्संग एवं भण्डारे के लिए वार्षिक तिथियाँ निश्चित हैं उन आयोजनों में हजारों की संख्या में मत के योगी तथा भक्तगण एकत्रित होकर सत्संग लाभ लेते हैं। नाथ संन्यासियों की अपने भक्तों अनुयायियों तथा शिष्यों का उपदेश करने की जो विधि अपनाई जाती है उसमें एक शब्द गायन के रूप में भी है नाथ सम्प्रदाय मूल रूप से योग को ही सर्वोपरि मानता है तथा (यथा पिंडे तथा ब्रह्माण्डे) की अवधारणा पर आधारित है संकेतात्मक रूप में सृजित किए

हुए शब्दों के द्वारा स्वयं के भीतर ही ब्रह्म को खोजने की विधि तथा मूल शिक्षा को लयबद्ध करने का प्रयास है मुझे आशा है कि योगीजन साधुमूर्ति मुझे आशीर्वाद प्रदान कर अनुग्रहित करेंगे तथा मेरे द्वारा स्वाभाविक रूप से हुई त्रुटियों को क्षमा करेंगे !

सभी नाथ सिद्धों को सत् नमो आदेश

सुधानाथ

गुरुजी 108 योगी श्री महादेव नाथ जी

जाफर पुर कला

नजफगढ़

नई दिल्ली

ॐ

स्तुति

ॐ गज मुख पखर विघ्न हर अभिष्ट सिद्धि प्रदायकम्।
गज बेली कन्थडनाथ गणपति एक दन्त विनायकम्॥
ॐ महायोगी गोरक्ष नाथ निर्गुणं निरायमे।
निर्विकार निर्विकल्पम योगेश्वर नमामहे॥
ब्रह्मादि विष्णु शेष जपते शिव गोरक्ष नाम निरंजनम्।
अनन्त कोटी देव गण करते तुम्हे नित वन्दम्॥
आत्म स्वरूपी अन्तर्यामी सकल भुवन सनमानही।
सत कोटी रवि सम तेज महिमा कहत सुर सकुचावंही॥
सिद्ध योगी ब्रह्मचारी मत्स्येन्द्र शिष्य कहा वही।
हो आदि नाथ के प्रोत्र कोई महिमा का पार न पावंही॥
करूणा सागर कण-कण वासी सर्व सत्यम् अखिलेश्वरम।
आनन्दकारी विद्या धारी आद्यः पुरूष सनातनम्॥

केवल्य पति दुर्गेय निर्मम भव बन्ध शोक विनाशनम्।
स्वघ्त सिद्ध श्रुति मान सूक्ष्म रूप दिव्य पराकरम्॥
अव्यक्त अविकारी अनामय शिव स्वरूप मंगलमयम्।
ॐकार ध्याना आधार सर्व योगियों के सेव्यम्॥
आदि, अनादि अक्षय अविचल शब्द ब्रह्म अतिन्द्रियम्।
विश्रात्मा अखल निरन्जन पूर्ण प्रकाश निराश्रम ॥
मायातीत-कालातीत योगेश्वर परं सुख प्रदायकम्।
मम हृदय करो निवास श्री गोरक्ष नाथ शरणागतम्॥
ये मूल मंत्र जो नित्य जपते ॐ शिव योगिन्द्रम।
आवागमन दुःख दूर हो - मिले परम पद कैवल्यम्॥
जीवन मरण संसह भ्रम अब हरऊं सकल कलेशनम्।
करूणायम हे नाथ - मैं करूं कर जोड़कर तुमको नमन्॥

भजन–1

गज मुख पखर विघ्न हर अभिष्ट सिद्धि प्रदायकम्
गज बेली कन्थडनाथ गणपति एक दन्त विनायकम्।।

टेक – तेरी जय हो गुरु गणेश

गजबदन गजानन प्यारे,
गज बदन गजानन प्यारे, गज बदन गजानन प्यारे

तुम षडानन के भ्राता – थारी पार्वती है माता
जिनके पिता हैं आप महेश – सृष्टि के रचाने वाले
तेरी जय हो गुरु गणेश – गज बन गजानन प्यारे।

मूसक सवारी साजे – सिन्दूरी तिलक विराजे।
तन पर निर्मल वस्त्र है श्वेत हो तुम चार भुजाओ वाले
तेरी जय हो गुरु गणेश.....

तेरे हाथ लड्डुओं का थाला – गले में पुष्पों की माला
रिद्धि सिद्धि रहती है संग हमेशा हो तुम चार भुजाओं वाले।
तेरी जय हो गुरु गणेश.....
तुम ध्यान रूप में आओ मेरा बेड़ा पार लगाओ
है सुधा नाथ का भगवा भेष जीवन सफल बनाने वाले
तेरी जय हो गुरु गणेश.....

भजन–2

जीवन मरण शसंह भ्रम मेरे काटो सभी कलेश
आठ पहर चौसठ घड़ी मेरी सदगुरु को आदेश

टेक – जन्मों से भटका हूँ राह तो दिखा दो
गुरु मेरे जीवन को जीवन बना दो।

बहुत पी चुका मैं विषयों का प्याला,
भूल गया हूँ अपना रूप निराला
कृपा करके अमृत का प्याला पिला दो,
गुरु मेरे जीवन को जीवन बना दो
जन्मों से हूँ भटका .....

ये छाई हुई है निराकार अंधेरी,
नाथ करो ना अब पल की भी देरी।

कृपा करके आशा का दीपक जलादो,
गुरु मेरे जीवन को जीवन बना दो
जन्मों से हूँ भटका .....

कहां तुम्हे ढूंडू कहां तुम्हे पाऊ,
करके जतन सब हार गया हूँ।
मिलोगे कहां ये पता तो बता दो,
गुरु मेरे जीवन को जीवन बना दो
जन्मों से हूँ भटका .....

नहीं ढुंडने की जरूरत कहीं भी,
मैं तो रमा हूँ तेरे अन्तर में ही
भक्त (शिष्य) अपने हृदय को निर्मल बना लो
गुरु मेरे जीवन को जीवन बना दो
जन्मों से हूँ भटका .....

डूब रहा हूँ मिला ना किनारा,
कहे सुधा नाथ मुझे तेरा सहारा
मुझे मेरी हस्ती (सत-चित-आनन्द) से परिचय करा दो
गुरु मेरे जीवन को जीवन बना दो
जन्मों से हूँ भटका राह तो .....

मेरे जीवन को जीवन बना दो .....

भजन–3

टेक – धूल तुम्हारे चरणों की गुरु चन्दन और अबीर बनी
जिस दिन से मस्तक पर लागई मेरी तो तकदीर खुली।

असंग जगत से सुरत हटाकर, सत्य शब्द का ज्ञान दिया।
जिस स्वरूप की परख कराकर, भव बन्धन से पार किया।
ज्ञान की ऐसी गंग बहाई, तन–मन होया नील मणी जिस.
धूल तुम्हारे चरणों की गुरु चन्दन और अबीर बनी।
अमृत रस का प्याला पीकर, मन होया निर्मल मोती।
लगी सूरत पर शब्द की झड़ी, झिल–मिल–झिल–मिल चमके ज्योति
बिन सुर ताल पखावज बाजे, होने लगी मंगल ध्वनि, जिस.
धूल तुम्हारे चरणों की गुरु चन्दन और अबीर बनी।

कृपा करि सदगुरु मेरे ने, जन्म–जन्म का मैल धोया,
अब हस्ती की खबर हुई, मैं अपनी मस्ती मैं खोया,
आन पड़े हैं शरण तुम्हारी, सदगुरु मेरे प्राण धनी, जिस....
धूल तुम्हारे चरणों की गुरु चन्दन और अबीर बनी

जीव से शिव बोध करा कर, गुरु वही जो अमर कर दे।
सच्चा सम्बन्ध गुरु शिष्य का और सभी स्वार्थ के
सुधानाथ कह शरण में आ तेरी बिगड़ी सारी बात बनी जिस..

धूल तुम्हारे चरणों की.....
जिस दिन से मस्तक पर लगाई मेरी तो तकदीर खुली।

भजन–4

दोहा – नाथ कृपा ऐसी करो सब दुख होवे दूर
चित चरणों में लगा रहे आनन्द हो भरपूर।

टेक – सुन मेरी सूरत रंगीली, भृकुटी में ध्यान धरो।

विषयों का समुन्दर गहरा, पग, पग जाल बिछो,
छोड़ विषय की आस हो निर्भय, भव जल तुरत तरो।
सुन मेरी सूरत.....

सत रज तम की पेड़ी बेड़िया,
इनसे जीव बन्धयो, त्रिगुण दोष बिसार गगन में, ऊँची उड़ान भरो।
सुन मेरी सूरत.....

गुरु शब्द का अमृत प्याला,
भर भर खूब पियो, शील संयम संतोष धार कर, मन आनन्द करो।
सुन मेरी सूरत.....

होय रही झन्कार शब्द की, उर में नाँद बजो,
सुधा नाथ कह आनन्द बरसे, गुरु के पांव परो।
सुर मेरी सूरत रंगीली .....

भजन–5

टेक – मत कहीं भरमता डोल, मन ओम शिव ओम शिव बोल !

श्वासों की डोर बनाकर के, मन के मनिए में घुमाकर के।
भृकुटी में ध्यान लगा करके, फिर अन्दर के पट खोल॥
मत कहीं भरमता डोल.....

सर्वत्र वो सब घट वासी है, आनन्द सहज सुख रासी है।
घट ज्योति रूपा प्रकासी है, मम कहीं भरमाता डोल॥
मत कहीं भरमता डोल.....

शिव शरण में जो भी आते हैं, संसय भ्रम सब मिटे जाते हैं।
नहीं फिर वो जगर में आते हैं, ये हैं नाम रतन अनमोल॥
मत कहीं भरमता डोल.....

जब शब्द झड़ी लग जाती है, तन–मन की सुधि मिट जाती है।
सुधा नाथ ये ही अब गाती है, वो पूरा है मत तोल॥

मत कहीं भरमता डोल, मन ओम शिव ओम शिव बोल।

भजन–6

टेक – पार्वती ने अपने मन में देखो कैसी ठानी–हो गोरक्ष की लैणं

परीक्षा चाली। शिव शंकर ने बहुत समझाई एक ना उसने मानी हो जति की.....

पार्वती चाल पड़ी शिव की नहीं मानी बात,
शिव स्वरूपी काया देखी चरणों में नवाया माथ
आदेश प्रणाम करि जोड़कर के दोनों हाथ
बिन शक्ति के शिव है अधूरे ऐसी मन में जानी।
हो जति की लैण.....

ब्रह्मा मोहे विष्णु मोहे ऋषि मुनि सब ही गए हार
नारद शारद देखो मैंने तीन लोक किए लाचार
माया से हो सृष्टि रचना चलता है ये सब व्यवहार
मेरे आगे हार मान गए सुर नर मुनि तनुधारी।

हो जति की लैण.....

माथे उपर मुकट सजाया गले मैं पहना नौ लड़ हार
नाक में नथबेसर सोहे लिया मुख में नागर पान धार
हथ कंगण कानों में कुण्डल किया है सुन्दर सिंगार

तन के उपर साजे साड़ी गोटे दार किनारी।

हो जति की लैण.....

पार्वती ने योग बल से माया का किया विस्तार,
नाग किन्नर गाने वाले बाजे बाजै बेसुम्मार
झूम-झूम कर नाचे वो तो पायल की हो रही झंकार
योगी बैठे मस्त ध्यान में हुई देख बड़ी हैरानी।

हो जति की लैण.....

माया की ना एक चली अन्त में गई थी हार
चरणों के में आन पड़ी लगी वो तो करने गुहार
बोले गोरक्ष जाओ देवी शिवजी तुझको रहे पुकार
कृपा करो हे नाथ गुरु मैं हूँ निपट अज्ञानी।

हो जति की लैण.....

माया के उस पार योगी लगी समाधि अखण्ड
सिद्धो के सिद्धान्त रहते योग में सदा आनन्द
कहे सुधा नाथ ये है परिपूर्ण पार ब्रह्म
सब जग के आधार नाथ तेरी जय हो अन्तर्यामी।

हो जति की लैण.....

भजन–7

दोहा – श्री शिव गोरक्ष नाथ जी ओंकार स्वरूप।
नाथ जोड़ विनती करूं हैं भूपों के भूप।।

टेक – मेरे तो आधार है श्री नाथ के चरणार विन्द।

सुनहरी जटाएं जैसे जड़े बहु रतन,
करूणा भरे नेत्र भाल त्रिपुण्ड सुशोभितम्।। मेरे तो आधार.

मस्तक अर्द्ध चंदा सोहे भस्मी लगी है अंग,
शिव अवतारी रहते योग में सदानन्द। मेरे तो आधार....

सूक्ष्म रूप से निवास करे घट, घट,
स्वम् प्रकास रूप अलख निरन्जन। मेरे तो आधार....

वेद कहे नेति नेति नहीं कोई आदि अन्त,
सगुण निर्गुण नित्य परिपूर्ण पार ब्रह्म। मेरे तो आधार....

साधु सन्त नर नारी जो भी आया है शरण,
मन इच्छा वरदान पावे कटे भव बन्धन। मेरे तो आधार....

ज्ञान के साक्षात रूप योगियों के परमानन्द,
सिद्धो के सिद्धान्त सुधा नाथ करे वन्दन। मेरे तो आधार....

भजन–8

टेक – एक ओंकार तेरा आधार,
ॐनाम से हो चित शुद्धि खुले मोक्ष का द्वार
एक ओंकार तेरा आधार।

ओंकार का सकल पसारा, प्रगटा शब्द भया उजियारा
तीनों लोक में हो रही है देखो जय जय कार
एक ओंकार तेरा आधार ....

सब मन्त्रों का सार है ये, मुक्ति का आधार है ये
प्रेम से जो जन रटते वो हो जाते भव से पार।
एक ओंकार तेरा आधार ....

नित उठ कर ध्याये योगी जन, जन्म मरण के कटते बन्धन
ॐ ही दाता ॐ विधाता ॐ ही पालन हार
एक ओंकार तेरा आधार ....

ॐनाम का ले लो सहारा, मिल जाएगा सहज किनारा
सुधा नाथ कह सब मन्त्रों का एक ये ही है सार

एक ओंकार तेरा आधार ....

भजन–9

टेक – शुभ कर्मो की कमाई म्य के नैली लाग्यै से, नौली लाग्यै से के नौली लाग्यै से.... शुभ कर्मो की.....

ज्ञान की तलवार धार काटे पाप नै,
मुर्ख के जाने पहचाने तिरिया ताप ने
एक बार चूक जा निशाना फिर के गोली लाग्ये सै।
शुभ कर्मो की कमाई में.....

फिरता फिरै भ्रम म्य भारी तम्बू ना ताणा,
बैठा ना कभी सतसंग म्य, तनै सतसंग ना जाणा
देखो पाछै डटता पानी पहलां डोली लाग्यै सै,
शुभ कर्मो की कमाई में.....

मन इन्द्री ने थाम हरी नाम रट ले,
सच्चा जपले नाम ही का पाप काट ले
सोते सांप ने जगावे जिसकी ओली लाग्य सै,
शुभ कर्मो की कमाई में.....

नित नया रोग शोक मानुष भोगी कै
कहे मच्छद्र नाथ लाग ना कोई योगी कै
योगी के कन्धे पै झोली सुथरी लाग्यै सै।

शुभ कर्मो की कमाई में.....

भजन–10

टेक–अब हम करि गुरु संग यारी, सांचे नैन लगे सतगुरु से, खुल गई भ्रम किवाड़ी

असंग जुगत से भटकत भटकत जन्म–जन्म रही कुवारी
अजर अमर सतगुरु दिया पाया मैं हुई नाम आधारी,
अब हम करि गुरु संग यारी

ओहंग सोहंग फिरिया फेरे सुखमन सेज सवारी
ले मन सुरति सुख से सो गई, सुख बिन सूनी अटारी,
अब हम करि गुरु संग यारी, सांच नैन लगे.....

जो सुख पावें कहा ना जावे वो सुख अथा अपारी
जीव ब्रह्म की हुई एकता तू नर मैं नहीं नारी।
अब हम करि गुरु संग यारी, सांच नैन लगे.....

परसा नाथ मिले गुरु पूरे मिटि कल्पना सारी,
बैठो नाथ शरण सतगुरु की आवागमन मिटाई,
अब हम करि गुरु संग यारी। सांचे नैन लगे सतगुरु से खुल गई भ्रम किवाड़ी।

भजन–11

टेक – शिव योगी गोरक्ष नाथ तुम्हारी जय होवे, जय होवे तेरी जय होवे.....

तेरा दिव्य स्वरूप निराली छटा, अखण्ड विभूति सुनहरी लटा
शिव शंकर के अवतार तुम्हारी जय होवे
शिव योगी गोरक्ष नाथ.....

हे ज्योति रूप घट घट वासी, सत चित आनन्द है सुख रासी
हो सब जग के आधार तुम्हारी जय होवे।
शिव योगी गोरक्ष नाथ.....

कोई आदि अन्त नहीं पाया है, अपरम्पार तुम्हारी माया है
वेद कहे नेति नेति गए हार, तुम्हारी जय होवे
शिव योगी गोरक्ष नाथ.....

हो साधु सन्त के रखवाले, जो ध्यान में रहते मतवाले
अब दूर करो अन्धकार, तुम्हारी जय होवे
शिव योगी गोरक्ष नाथ.....

सुर नर मुनि जन करते वन्दन, सुमरण के कटते भव बन्धन
करो भव सागर से पार – तुम्हारी जय होवे।
शिव योगी गोरक्ष नाथ.....

तीनलोक के तुम हो स्वामी, सर्वव्यापक अन्तर्यामी
सुधा नाथ की सुनो पुकार तुम्हारी जय होवे, जय होवे तुम्हारी जय होवे
शिव योगी गोरक्ष नाथ.....

भजन–12

टेक – मन में जरा विचार बुल–बुला पानी का
मुरझायेगा फूल जो खिला जवानी का

ये जीवन तेरा ऐसे, पानी का पतासा जैसे
जब मार पड़ेगी यम की, फिर जान बचेगी कैसे तेरी अभिमानी का
मुरझाएगा फूल जो खिला जवानी का।
मन में जरा विचार.....
उठ जाग ना अब कर देरी, क्यों करता मेरा मेरी,
ये सुन्दर काया तेरी, हो जाए राख की ढेरी तेरी नादानी का
मुरझाएगा फूल जो खिला जवानी का।
मन में जरा विचार.....

ये पिंजरा हुआ पुराना, इस पंछी ने उड़ जाना,
गुरु नाम सुमर ले भाई ये मौका हाथ न आना तेरी जिन्दगानी का

मुरझाएगा फूल जो खिला जवानी का।

मन में जरा विचार.....

नुगरा मत रहना भाई, नुगरे की खोटी कमाई,
महादेव नाथ शरण में जाई तेरा जन्म सफल हो जाई तेरी मनमानी का
मुरझाएगा फूल जो खिला जवानी का
मन में जरा विचार.....

भजन–13

टेक – बन्दे भजन करा कर राम का वासी हो जा स्वर्ग के धाम का

तू तो कर भगति में ध्यान, तेरे सिद्ध होगे सब काम
बेड़ा पार करे भगवान, वो तो सब का राखे ध्यान।
बन्दे भजन करा.....

मानव की तकदीर बनी सै एक मर्द एक बीर बनी सै
ये शरीर बना सै तेरा चाम का, वासी हो जा स्वर्ग के धाम का।
बन्दे भजन करा कर राम का वासी हो जा स्वर्ग के धाम का।

अब तो कर भगति में ध्यान, तेरे सिद्ध होगें सब काम

बेड़ा पार करे भगवान, वो तो सब का राखे ध्यान,
बन्दे भजन करा कर राम का वासी हो जा स्वर्ग के धाम का

उस मालिक से प्रेम बना ले, भगति करण का नेम बना ले
टेम बनाले सुबह शाम का, वासी हो जा स्वर्ग के धाम का
बन्दे भजन करा कर राम का वासी हो जा स्वर्ग के धाम का

गिणी रे गिनाई ग्यारा सखी, ज्ञान ध्यान त्यै जा सै राखी
ले ले तू सहारा गुरु नाम का वासी हो जा स्वर्ग के धाम का
बन्दे भजन करा कर राम का वासी हो जा स्वर्ग के धाम का

गुरु महादेव नाथ जी से ज्ञान सुणा सै, जो मिल गया वो बहुत घणा सै
ये तन बिन भजन किस काम का वासी जा स्वर्ग के धाम का
बन्दे भजन करा कर राम का वासी हो जा स्वर्ग के धाम का

भजन–14

टेक – दो दिन की जिन्दगी चलता हुआ श्वास है
आज तू यहां और कल ना रह पायेगा।

तुम हंसते रहा करो दो दिन का दर्शन मेला
माटी में मिल जाएगा तेरा हुसन रूप अलबेला

एक दिन जायेगा अकेला जायेगा अकेला।
जीते जी की आस है,
आज तू यहां और कल ना रह पायेगा।

मुक्ति चाहे तो सहारा ले ले ज्ञान का
काट सहारे लोहा तैर जाएगा कर सतसंग विद्वान का
उस त्रिलोकी भगवान का सारे क्यै प्रकाश है,
आज तू यहां और कल ना रहे पायेगा।

किसकी करे मरोड़ छोड़ दे अपना यो शरीर ना
काल बली टकराएगा जब चले तेरी तदबीर ना
यो अपना ब्याही बीर ना, जो प्यारी तेरी खास है,
आज तू यहां और कल ना रहे पायेगा।

ये खाक बन जाएगा तेरा गात यो गौरा गौरा
रंग रूप यो हुसन जवानी सदा रह ना तेरा डटोरा
ये लख राम छोरा महादेव नाथ जी का दास है,

आज तू यहां और कल ना रह पायेगा।
दो दिन की जिन्दगी चलता हुआ श्वास है
आज तू यहां और कल ना रह पायेगा।

भजन–15

टेक – राम नाम रटले सत पर चाल रे बन्दे तज झूठ कपट छल और जंजाल रे बन्दे

आया था किस काम को हर नाम भूल गया
माया के प्रपंच में फंस कर ज्यादा टूल गया
घर बल में फूल गया उठे जोबन की झारे रे बन्दे।
तज झूठ कपट छल और जंजाल रे बन्दे।

भोग के संग मन रम गया जैसे दीवा चस गया
होया काल के चक्कर में तू घणा फंस गया।
उसका कुछ नहीं बिगड़े तेरा आ गया काल रे बन्दे
तज झूठ कपट छल और जंजाल रे बन्दे।

अब तो सोच समझ ले नहीं त्यै फिर दु:ख पावैगा
चौरासी म्ये घूम घूम फिर कष्ट उठावैगा, कोई नहीं बचावैगा
होगा बेहाल रे बन्दे। तज झूठ कपट और जंजाल रे बन्दे

अभिमान गुमान छोड़ दे नहीं त्यै घणा पछतावैगा
सन्त कहे ये जन्म तेरा गवारे जावेगा,
महादेव नाथ मन भावैगा हरि नाम रे बन्दे
तज झूठ कपट और जंजाल रे बन्दे राम नाम रटले सत पर

चाल रे....

भजन–16

टेक – धर आकाश पवन नहीं पानी ना छी आदि भाई

ब्रह्मा विष्णु महेश नहीं था त्रिलोगी ने कोई रचाई
या तो वेद थारा बोलता ने लख्या कुडी मत भाखो भाई जग
माई घर आकाश पवन.....

शब्द प्याला में आरम्भ रचिया नेम लिया जोग भाई
भवन भैया के धर्म का मेला जब तो सृष्टि रचाई
धर आकाश पवन नहीं पानी ना छी आदि भाई

ब्रह्मा जी के उदालक जन्मा तन मन तपस्या कराई
पर नारा मे प्रेम रस खोई अलणी वस्तु गवाई
धर असमान पवन नहीं पानी ना ही छी आदि भाई

तन मन धन गुरु जी को अर्पण कीजे जब म्हाने वस्तु लखई
नौ नाथो में जति गोरक्ष बोला वेट टेपड़ा के भाई
धर आसमान पवन नहीं पानी ना छी आदि भाई

भजन–17

टेक – सन्तो काई आवे रे कोई जावे – बोले सै इसकी खबर करो, इसकी खबर करो, सन्तो कोई आवे.....

पानी का नर बना बुलबुला धरा आदमी नाम,
कोल किया था भजन करण का आन बसा लिया गाम,
बोले से इसकी खबर करो.....सन्तो काई

इधर से अन्धा आवत रे उधर से अन्धा जाए
अन्धे से अन्धा मिला रे मार्ग तो कौन बताए
बोले से इसकी खबर करो, सन्तो काई.....

हर मन्दिर में चोरी हो गई, हरि गई एक नार
ताला तो टूटा नहीं, नाही कोई फूटी रे दिवार
बोले से इसकी खरब करो.....सन्तों काई आवे रे.....

हस्ती छूटा ढाण सै रे कसवे पड़ी पुकार
दस दरवाजा बन्द रहा रे निकल गया असवार
बोल से इसकी खर करो। सन्तो कोई आवे.....

कह मच्छन्द्र सुन जति गोरक्ष अलख पुरुष
मिल जाए, गगन मंडल के गोखडे रे ज्योति में ज्योति समाए
बोले से इसकी खबर करो..... सन्तो काई आवे रे काई जाए बोले सै...

भजन–18

टेक – हे मेरे भौरंग भईया चलना कठिन पग दूर,
मूल चक्र के बन्ध लगा कर, बैठे आसन पूर मेरे..

आन पान मिलाय के खुद में हो रहा मजूर
माया सर्पणी ने सब जग खाया कर दिया चकना चूर
मेरे भौरंग भईया चलना कठिन पग दूर, मूल चक्र के बन्द लगा

निज अक्षर को नैलो नागी पर नदिया से उठ रही ल्हूर
उस अक्षर को धरो गगन में बज रहे अनहद तूर
मेरे भौरंग भईया चलना कठिन पग दूर.....

इंडा पिंगला तट त्रिवेणी चन्दा साधो सूर
लगा सुरती तुम चढ़ा गगन में दर्शे साई का नूर
मेरे भौरंग भईया चलना कठिन पग दूर।

बड़े–बड़े योगी सन्त मुनि जन वे भी रटे जरूर
उस पद को कोई जाणे विरला वे पद रह गए दूर
मेरे भौरंग भईया चलना कठिन पग दूर।

म्हाने मिले मच्छन्द्र योगी पद दीना भरपूर
गोरक्ष पहुँचा अटल भोग का सब दुख हो गये दूर
मेरे भौरंग भईया चलना कठिन पग दूर।

भजन–19

टेक – हाँ गुरु जी धरती घड़िया अम्बर घड़िया घड़िया मेर सुमेर

सिया सेती मानुष घड़िया जा निपजे हीरा जोगी जोगारम्भ
साधो गगन में नाद बाजे झीणा सैर में आवाज हो री जी.

हां गुरु जी बंक नाल रस धोरे लाग्या थारी सुमरण क्यारी ने पाल्यै
या क्यारी में क्या–क्या निपजे या की खबर मंगाले
जोगी जोगारम्भ साधो गगन में नाद बाजे झीणा सैर में....

हां गुरु जी त्रिवेणी टक साल पड़े सै धारी हीरा ने खरी कराले
सुरत संडासी अकल आकड़ा या की खबर मंगाले
जोगी जोगारम्भ साधो गगन में नाद बाजे झीणा सैर में
आवाज हो री.... हां गुरु धारती धड़िया अम्बर

हां गुरु जी अष्ट कमल में बतीस पंखड़ी या में सहस रंग भीरा
हद छोड़ बेहद पहुँचे दर्शे ख्याल अगम का

जोगी जोगारम्भ साधो गगन में नाद बाजे झीणा
सैर में आवाज होरी जी .....

हां गुरु जी नौ देवी दसो देवता थारे आगल पंथ ने घ्याले
चार चरण जति गोरक्ष बोला तीन लोक दर्शाले
जोगी जोगारम्भ साधो गगन में नाद बाजे झीणा सैर में
आवाज हो रही
हां गुरु जी धारती धड़िया अम्बर धड़िया धड़िया मेर सुमेर
सिया सेती....

भजन–20

टेक – जुगड़ो म्ये रगडो तगडो रे सुन मेरे मनवा बीर, सुन मेरे मनवा बीर

ये माया डंकनी आगी, डोले सै भागी भागी
रै या बड़े बड़ो ने खागी, हुए राजा रंक फकीर
जुगड़ा म्ये रगड़ो तगड़ो रे – सुर मेरे मनवा बीर

ये तृष्णा दुति नारी, बोले सै प्यारी प्यारी,
रै या दे दे कर किलकारी या खागी सारो शरीर
जुगड़ा म्ये रगड़ो तगड़ो रे – सुर मेरे मनवा बीर

ये भाई बन्धु सत दारा, ये कोई नहीं है हमारा

सब मतलब का परिवारा, ये इकला जावे शरीर
जुगड़ा म्ये रगड़ो तगड़ो रे – सुर मेरे मनवा बीर
महादेव नाथ रंग झीणा, हर रंग म्ये मन रंग लीणा
तू राख धर्म का बीणा, कर संकट में शीर
जुगड़ा म्ये रगड़ो तगड़ो रे – सुर मेरे मनवा बीर

भजन–21

टेक–तेरी थोड़ी सी जिन्दगानी तू राम भज रे प्राणी सैलानी भौंरा रम जाएगा

तू बना फिरे सै छेल रे, धोया ना मन का मैल रे
तू यू मत जाने छेल रे, ये चलता इंजन थम जायेगा।
तेरी थोड़ी से जिन्दगानी रे प्राणी सैलानी भौरा रम जाएगा।

तू देख छबीली चाम रे, भाई मत कर खोटा काम रे
तू तो भूल गया भगवान रे, ये सच्चा हीरा गुम जाएगा
तेरी थोड़ी से जिन्दगानी रे प्राणी सैलानी भौरा रम जाएगा।

तू बहुत करे अभिमान रे, तेरे आवे इमान रे
भाई अपनी अपनी तान रे, ये मन तेरा डुल जायेगा,
तेरी थोड़ी से जिन्दगानी रे प्राणी सैलानी भौरा रम जाएगा।

ये गावे महादेव नाथ रे, तेरे कुछ नहीं आवे हाथ रे।
चरणों में गुरु के धर माथ रे, क्ये राम तेरा मिल जाएगा।
तेरी थोड़ी से जिन्दगानी रे प्राणी सैलानी भौरा रम जाएगा।

भजन–22

टेक – हर का भजन किया कर बन्दे हो सब झगड़े से दूर।

तेरी दो दिन की जिन्दगानी एक दिन जाना पड़े जरूर।

भजन हरी का किया नहीं फिर बन्दे पछतायेगा।
गया वक्त फिर हाथ ना आवेगा, काल बली टकरायेगा
जब हो जा चकना चूर, तेरी दो दिन की जिन्दगानी.....

उस ईश्वर का ध्यान लगा ले, भजन कर मुक्ति पद पाले
तोड़–तोड़ कर खाले ये सत पर पके अंगूर
तेरी दो दिन की जिन्दगानी एक दिन जाना पड़े जरूर।

परमेश्वर की भक्ति कर जा, भव सागर से पार उतर जा
फन्दे के म्है जब फंस जा गा उस दिन हो जायेगा मजबूर
तेरी दो दिन की जिन्दगानी एक दिन जाना पड़े जरूर।

गुरु से ज्ञान लिया सेवा कर के पार उतर जा खेवा करके
महादेव नाथ की सेवा करके मिला गाने का सहूर
तेरी दो दिन की जिन्दगानी एक दिन जाना पड़े जरूर।

भजन–23

टेक – ऐसा बाग लगाया तेरी माया न्यारी, तरह–2 के फूल बाग में खुशबू आ रही.....

पांच तत्व से बाग बना नौ दरवाजे खुले हुए
दसवें का बन्द ताला हण्डे दरवाजे पर जले हुए
चेतन पेड़ धर्म का पानी फूल कर्म से खिले हुए
माही सै फूल हजारी – तेरी माया न्यारी, तरह–2 के फूल बाग में

पांच तोते फल खाणे वाले बाग में कर जां नुकसान
तोते का रखवाला माली पहले उपर बैठा ज्ञान
दोनों मालण रक्षा करती दरवाजे पर रहता ध्यान
एक माली दे किलाकारी – तेरी माया न्यारी, तरह–2 के फूल बाग में

बीच में तलाब बना चोगरदे न्यै केशर क्यारी,
जितने पौधे लगे बाग में सारा क्य म्है पानी जारी
चमन की देखो बाहर बाग ऐसा गुलजारी, माही सै केशर क्यारी तेरी माया न्यारी, तरह–2 के फूल बाग में

गुरु महादेव नाथ का शरगा ले के छन्द बनाया घड़ क्यै

न्यू आया न्यू जागा कदे ना देखा बाग में बड़ क्यै
शान्ति का फल खा लख कदे तू नाड़ तुड़ा ले पड़ क्यै
बन कर के प्रेम पुजारी। तेरी माया न्यारी, तरह-2 के फूल
बाग में

भजन-24

टेक – इस माया रूप संसार में नर किस कारण आया था, नर किस कारण आया था, नर किस कारण आया था।

नहीं धन जोड़कर कुआं खुदवाया, नहीं कोई साधु ब्राह्मण जिमाया नहीं कोई पैसा पून्य में लगाया, तनै लूटा गरीब उजाड़ में, धन माल बिराणा लाया था। इस माया रूप संसार में.....

कथा भागवत पढ़ी नहीं गीता, मुर्ख रहा भरमता रीता
यम के द्वारे तेरा होएगा फजीता, फिर मार पड़े बेहाल म्ये
नर किस कारण आया था।

कपटी लोभी बन गया कालीम काल बली ने जाएगा जालिम
खड़े तमाशा देखे आलीम, फिर रूदन किया तेरी नार ने
जिसे बांध मोड़ लाया था। इस माया रूप संसार में नर किस.

बीरज करे नर मोटा मोटा, इसमें पड़े चौगना टोटा

यम के द्वारे बजेगा सोटा, क्यों डूब रहा मझदार में

तनै परसा नाथ गाया था। इस माया रूप संसार में नर किस कारण.....

भजन–25

टेक – शब्द झड़ लाग्यौ हे, बरसण लाग्यो रंग, बरसण लाग्यो रंग सुहागन हेरी बरसण लाग्यो रंग।

जन्म मरण की चिन्ता भागी, सुमरत नाम भजन लौ लागी
सतगुरु दीनी सैन – हेरी म्हारी सतगुरु दीनी सैन
सत घर पाग्यौ हे – बरसण्न लाग्यो रंग,
शब्द झड़ लाग्यो.....

चढ़ी सुरत पछेन्द्र दरवाजा, त्रिकुटि महल से पुरूष एक राजा
अनहद की झंकार – हेरी म्हारी अनहद की झंकार बजे वहां
बाजा हे बरसण लाग्यो रंग।
शब्द झड़ लाग्यो.....

अपने पिया संग जाकर सोई, संसय शोक रहा ना कोई
कट गया कर्म कलेश, हेरी म्हारी कट गया कर्म कलेश,
भ्रम भू भाग्या हे – बरसण लाग्यो रंग
शब्द झड़ लाग्यो हे – बरसण लाग्यो रं।

शब्द विहगंम चाल हमारी, परसा नाथ गुरु मौहे तारी
रिम झिम रिम झिम होय – हेरी म्हारी रिम झिम रिम झिम होय
काल बस आग्यो हे बरसण लाग्यो रंग
शब्द झड़ लाग्यो हे .....

भजन–26

टेक–भरमति क्यों डोले तुम में तेरो राम, तुझ में तेरा राम सुहागन हेरी तुझ में तेरा राम, भ्रमाती क्यों.....

हां म्हारी हेरी सात दीप नौ खण्ड, सुहागन हेरी सात दीप नौ खण्ड जगत में म्हारा हर बोले तुझ में तेरो राम।

भरमति क्यों.....

हां म्हारी हेरी जड़ रहे अजड़ किवाड़, सुहागन हेरी जड़ रहे अजड़ किवाड़ गुरु के बिना कौन खोले – तुझ में तेरा राम।

भरमति क्यों.....

हां म्हारी हेरी बिन डाण्डी बिन बाट, सुहागन हेरी डाण्डी बिन बाट जगत ने म्हारा हर तोले, तुझ में तेरो राम।

भरमति क्यों.....

हां म्हारी हेरी त्रिवेणी के घाट, सुहागन हेरी त्रिवेणी के घाट
समझ कर अपना दिल धोले – तुझ में तेरो राम।
भरमति क्यों.....

हां म्हारी हेरी मिल गये महादेव नाथ,
सुहागन हेरी मिल गये महादेव नाथ, रमईया तेरे माही बोले
तुझ में तेरो राम.....भरमति क्यों.....

भजन–27

टेक – थोड़ी सी जिन्दगानी रटले राम रे बन्दे, चलतो हलतो मलतो सुबह शाम रे बन्दे

मात–पिता की सेवाकर आशीष ले लीजे,
सदगुरु जी क्यै पास बैठ तू ज्ञान सुल ली जे,
वा के शब्द न्यै खे लीजे फिर मिले परम धाम रे बन्दे
थोड़ी सी जिन्दगानी रट ले राम रे बन्दे।

सद गुरु चरणों चाल नहीं त्यै काल तो आ गया
हंस पणा का गैला ले नहीं रह जा सी कागा
पापों का कतरा छा गया – जमारो जा बेकार रे बन्दे–
चलतो, हलतो

खासा मरवमल पहनता तू करता घणा मिजाद

नाचे गावे टेर लगावे और बजावे साज
दारू पर मत म्यलै आग तेरा टूटे मकान रे बन्दे- चलतो हलतो

सोच समझ कर चाल एक दिन हेरा जावेगा
मोह लाल के चक्कर म्यै पड़ घणा दुःख पावेगा।
महादेव नाथ मिल जावेगा - धर गुरु का ध्यान रे बन्दे, चलतो हलतो मलतो

भजन-28

टेक - कोई ले लो रे ले लो प्रभु का नाम ले लो प्रभु का नाम कोई ले लो प्रभु का नाम कोई.....

प्रेम नगर से चलकर आया राम नाम की बालंद लाया
गुरु शब्द अनमोल रतन है-2 कोड़ी लगे ना दाम
कोई ले लो रे ले लो प्रभु का नाम, ले लो.....

बाट तराजु है कुछ नाही मोत तोल हम करते नाही
हम तो सौदा सत का करते नहीं तोलन का काम
कोई ले लो रे ले लो प्रभु का नाम, ले लो.....

राम नाम का खुला खजाना लेवेगा कोई संत सुजाना

सुगरा हो तो भर भर पीवे नहीं नगर का काम
कोई ले लो रे ले लो प्रभु का नाम, ले लो.....

इन पांचों से प्रीत ना करना निर्भय नाम सदगुरु का सुमरना
महादेव नाथ शरण में थरी सदगुरु का पैगाम
कोई ले लो रे ले लो प्रभु का नाम, ले लो.....

भजन–30

टेक – श्री गोरक्ष नाथ जी को नाम हमने प्राण प्यारो जी, शिव गोरक्ष जी

सिद्ध योग का मार्ग चलायो, योगी राजेश्वर कह लायो
जीव से शिव का भान करायो, हमने प्राण प्यारो जी।
श्री गोरक्ष जी को नाम हमने प्राण प्यारो जी।

अव्यक्त अलख गति जोई, है अलख निरन्जन सोई
उसका मर्म ना जाने कोई, हमने प्राण प्यारो जी
श्री गोरक्ष जी को नाम हमने प्राण प्यारो जी।

वो गुणातीत अविनासी, आनन्द सहज सुख रासी
है शून्य देश को वासी, हमने प्राण प्यारो जी
श्री गोरक्ष जी को नाम हमने प्राण प्यारो जी।

शिव गोरक्ष जो कोई गावे, उसका आवागमन मिट जावे
वह तो मोक्ष मुक्ति नर पावे, हमने प्राण प्यारो जी
श्री गोरक्ष जी को नाम हमने प्राण प्यारो जी।

शिव रूप हो अलख निरन्जन थारो नाम सभी दुख भंजन
सुधा नाथ करे नित वन्दन हमने प्राण प्यारो जी,
श्री गोरक्ष जी को नाम हमने प्राण प्यारो जी।

भजन–31

टेक – साधो सब मन का व्यवहार जगत में नाना रूप धरे
नाना रूप धरे जगत में नाना रूप धरे

हाथ पांव मूँह नहीं माथा – चहू दिशा की सैर करे
या मन की गति चंचल है अति सपने में आ झगरे
साधो सब मन का व्यवहार जगत में नाना रूप धरे

कभी तो मन बन जाए भिखारी, कभी मन राज करे
कभी चतुर पण्डित ज्ञानी, कभी काम क्रोधा में जरे
साधो सब मन का व्यवहार जगत में नाना रूप धरे

आत्म सुख को मरम का जाने, विषयों संग केलि करे
सुकर्म से मुखड़ा मोड़े करे कुकर्म नहीं डरे
साधो सब मन का व्यवहार जगत में नाना रूप धरे

पारा की ज्यूं ढलक जाए ना एक घड़ी ठहरे
इन्द्रियों से तृप्ति नहीं पावे, भ्रगया ज्यूं भरमे।
साधो सब मन का व्यवहार जगत में नाना रूप धरे

देव दनुज कहे जति सती मन मारे ना मरे
जो मन ध्यान ब्रह्म में लावे अमन हो अजर झरे
साधो सब मन का व्यवहार जगत में नाना रूप धरे

भजन–32

टेक– शंकर रम गया रे पहाड़ो में गौरा पार्वती के संग, पार्वती के संग, शंकर रम गया रे पहाड़ो में

क्या मांगे नादिया रे क्या तो मागे गणेश
क्या तो मांगे पार्वती रे धर जोगन का भेष
शंकर रम गया रे पहाड़ो में गौरा पार्वती के संग, पार्वती के संग गौरा.....

दूब मांगे नादिया रे चावल मांगे गणेश
दर्शन मांगे पार्वती रे धर जोगन का भेष
शंकर रम गया रे पहाड़ो में गौरा पार्वती के संग, पार्वती के संग गौरा.....

आंकड़ा की रोटी पावे धतूरे का साग,

भांग की तरकारी बनावे जिमे भोलानाथ
शंकर रम गया रे पहाड़ो में गौरा पार्वती के संग, पार्वती के संग गौरा.....

सेर मंगाई कडी तम्बाकू सेर मंगाई भंग
घोट घोट कर गौरा देवे दूना आवे रंग
शंकर रम गया रे पहाड़ो में गौरा पार्वती के संग, पार्वती के संग गौरा.....

ढोलक बाजे मंजीरे बांजे और बाजे मृदंग
महादेव की ताली बाजे सब भक्तन के संग
शंकर रम गया रे पहाड़ो में गौरा पार्वती के संग, पार्वती के संग गौरा.....

भजन–33

टेक – हे मानव तू भजन करे जा, भजन करे ते हर मिलजा आवागमन तेरा मिटजा

हुआ ज्ञान भृतहरि जी को देख शिव गोरक्ष की शक्ति
राज पाठ सब त्याग दिया मांगी थी चरणों की भक्ति
गिरनार में जाकर करि तपस्या फिर बेरा खुद का पटग्या
आवागमन तेरा मिट जा..... हे मानव तू भजन करे जा.....

मुण्ड माला को देख सती ने ऐसी मन में ठानी थी
शिव शंकर उपदेश दिया जब मन की मिटी ग्लानी थी
परम तत्व का ज्ञान हुआ फिर जन्म मरण का फन्द कटग्या
आवागमन तेरा मिटजा, हे मानव तू भजन करे जा.....

भ से भ्रम है **ज** से जान इसे **न** से रह इससे न्यारा
गुरु शब्द है सार जगत में ये सन्तो ने समझाया
राम से बढ़कर नाम बताया जो नित्य मन में रम जा
आवागमन तेरा मिलटा, दे मानव तू भजन करे जा.....

ईश्वर की महिमा को वेद भी नेति नेति कह गाते हैं
जिसने स्मरण किया शब्द का नहीं लौट जगत में आते हैं
सुधा नाथ कह भजन करने से तेरा भी भव बन्धन कट जा
आवागमन तेरा मिट जा। हे मानव तू भजन करे जा
भजन करे तै हर मिलजा आवागमन तेरा मिट जा।

भजन–34

टेक – लख अन्दर निज रूप को प्यारे, झूठे जगत में कोई सार नहीं है।

वायदा गर्म में करके तू आया, बाहर आकर सब कुछ भुलाया गया
जन्म वृथा किया विचार नहीं है, झूठे जगत में कोई सार नहीं है

लख अन्दर निज रूप को प्यारे झूठे जगत में कोई सार नहीं है।

विवेक विचार बिना नर अन्धा, बिना ज्ञान कटे कैसे जन्मों का फन्दा
बिना भजन भवपार नहीं है, झूठ जगत में कोई सार नहीं ह
लख अन्दर निज रूप को प्यारे झूठे जगत में कोई सार नहीं है।

देह प्रपंच में फंस गया ऐसे, प्रीति सुआ सेमर की जैसे
सुमरण बिन उद्धार नहीं है, झूठे जगत में कोई सार नहीं है
लख अन्दर निज रूप को प्यारे झूठे जगत में कोई सार नहीं है।

मोह का हृदय में उड़त है झाला, बिन सतगुरु नहीं जाएगा टाला
बिन गुरु कृपा के जुड़ता तार नहीं है, झूठे जगत में कोई सार नहीं है
लख अन्दर निज रूप को प्यारे झूठे जगत में कोई सार नहीं है।

सत्य में ही रहना सत्य ही कहना, मिले निर्भय पद आनन्द कोई भय ना
कहे सुधा नाथ असत का व्यवहार नहीं है, झूठे जगत में कोई सार नहीं है
लख अन्दर निज रूप को प्यारे झूठे जगत में कोई सार नहीं है।

भजन–35

टेक –गणपति वासा मूल महल में सदगुरु ने समझाया है
जो सच्चे मन से ध्यान धरे वो ज्ञान अगम का पाया है

शक्ति स्वरूप चतुर्थ दल पंखड़ी जो गंग होता लाया है।
रिद्धि सिद्धि कर जोड़ खड़ी है ऐसी उसकी माया है।
गणपति वासा मूल महल में सदगुरु ने समझाया है।
जो सच्चे मन से ध्यान धरे वो ज्ञान अगम का पाया है।

इंडा पिंगला और सुषमणा जो तीनों एक घट लाया है
गुरु रहम से लगी समाधि जग मग दीप जलाया है
गणपति वासा मूल महम में सदगुरु ने समझाया है !
जो सच्चे मन से ध्यान धरे वो ज्ञान अगम का पाया है।

योग युक्ति जो योगी जाने वाले सोहंग धुन में समाया है
वह शून्य देश में रमण करे नहीं लोट जगत में आया है
गणपति वासा मूल महल में सदगुरु ने समझाया है।
जो सच्चे मन से ध्यान धरे वो ज्ञान अगम का पाया है।

जब सदगुरु की कृपा हुई निज सहज स्वरूप को पाया है
सुधा नाथ कह बिन जिभा बिन अक्षर गुण गाया है।
गणपति वासा मूल महल में सदगुरु ने समझाया है।
जो सच्चे मन से ध्यान धरे वो ज्ञान अगम का पाया है।

भजन–36

टेक – गजधन रूप जवानी धन त्यै यो सत्संग बड़ा बताया
सत्संग का फल वैसा मिलजा जैसा करना चाहा।

नारद का सत्संग करके ध्रुव पर ली पार उतरगे
शिवजी का सत्संग करके भगीरथ गंगा के म्हां तरगे
कुम्हारी का सत्संग करके पहलाद खम्ब की कोली भरगे
शिव गोरक्ष का सत्संग करके गोपी चन्द भृतहरि काया अमर करगे
मोरध्वज के लड़के चिरगे जब कृष्ण चल कर आया
सत्संग का फल वैसा मिलजा जैसा करना चाहा।
गजधन रूप जवानी धन त्यै यो सत्संग बड़ा बताया.....

माता का सत्संग कर भीष्म जी रहगे कतई कवारे
कौरवों का सत्संग करके पाण्डव जुवे म्ये हारे
कृष्ण का सत्संग कर पाण्डवों ने भाईयों के सिर तारे
जिसने जैसा सत्संग किया मैं गिणदूँ न्यारे न्यारे
जित सत्संग का फल वैसा मिला जा जैसा करना चाहा,
गजधन रूप जवानी धन त्यै यो सत्संग बड़ा बताया.....

जनमेदा के वेद व्यास ने आकर सत्संग लाया
सत्संग मान्या ना दाग लाग्या बहुत घणा दुःख पाया

कृष्ण का सत्संग कर हर नन्दी ने भात था भरवाया
शिवि रूप की काटगी काया जब विष्णु ने अजमाया,
सत्संग का फल वैसा मिल जा जैसा करना चाहा।
गजधन रूप जवानी धन त्यै यो सत्संग बड़ा बताया.....

गुरु महादेव नाथ का सत्संग कर लख राम गुलिया वाला
इस भूमण्डल पृथ्वी पर सन्तों का देश निराला
शशि भानू निकले ना रह आठ पहल उजियाला
जहां ब्रह्म ज्ञान की बाजे माला ये सौ का तोड़ बकाया,
सत्संग का फल
गजधन रूप जवानी धन त्यै यो सत्संग बड़ा बताया.....

भजन–37

टेक – थारी जय हो नौ नाथ मैं आयो शरण मैं, आयो शरण में आयो.....

मेरी रक्षा करो नाथ आयो शरण मैं.....

प्रथम आदि नाथ प्रभु जो सब जग के आधारा
सगुण निर्गुण नित्य परिपूर्ण शब्द रूप ओंकार
चरण नवाऊ में तो माथ – आयो शरण में
थारी जय हो नौ नाथ आयो शरण में.....

द्वितीय उदय नाथ श्री जो आदि शक्ति कहलाई
जगत जननी है मात भवानी परा शक्ति महामाई
भक्त पर करो कृपा हे मात – आयो शरण में
थारी जय हो नौ नाथ आयो शरण में.....

तृतीय सत्य नाथ ब्रह्मा जी सृष्टि का सर्जन हारा
चार वेद समस्त कला महाज्ञान के भण्डारा
चराचर थारी करामात – आयो शरण में आयो शरण में आयो
मेरी रक्षा करो नाथ आयो शरण में आयो शरण म.....

चतुर्थ है सन्तोषनाथ जो विष्णु रूप बताया
दे भक्ति ज्ञान रस चेतन करते आनन्द होवे काया
पालन करते हैं माया साथ – आयो शरण में थारी। जय नौ नाथ.....
मेरी रक्षा करो नाथ आयो शरण में आया शरण में.....

पंचम अचल अचम्भे नाथ जी जो शेष रूप भगवान
अष्ट कुलि नागों के स्वामी देते सिद्धो को वरदान
धरा को धरो शीश धन भाग, आयो शरण में थारी जय नौ नाथ आयो.....

षष्टम गज कन्थड़ नाथ गजानन योगी जन के प्यारे
विघ्न हरण मंगल के दाता भक्तो के रखवारे
तुम्हे ध्याऊ में नित प्रातः, आयो शरण में थारी जय हो नौ नाथ आयो.....

सप्तम है चौरंगी नाथ जी चन्द्र देव अवतार
सारी वनस्पति के रक्षक बरसे अमृत धार
सोहे शिवजी के ललाट – आया शरण में, आयो शरण में आयो शरण में
मेरी रक्षा करो नाथ – आयो शरण में।

अष्टम है मत्स्यैन्द्र नाथ जी तन्त्र मन्त्र के स्वामी
योग माया के गुरु आप हैं महा योगी महा ज्ञानी
वन्दन करूं जोड़ कर हाथ – आयो शरण में थारी जय नौ नाथ.....

नवम् गोरक्ष नाथ निरन्जन योगी राज योगेश्वर,
घट घट व्यापक अन्तर्यामी पार ब्रह्म परमेश्वर
आप हो सिद्धों के सिद्धान्त – आयो शरण में थारी नौ नाथ आयो.....
मेरी रक्षा करो नाथ आयो शरण में, आयो शरण में.....

भजन–38

टेक – अब मान मेरा कहना क्यों करता है मनमानी
जिन्दगी का क्या भरोसा कब उड़ जा हंस सैलानी

यह देह मरण धर्मा है, प्रपंच में क्यों रमा है
उठ जाग ना अब कर देरी निज रूप को समझ रे प्राणी
अब मान मेरा कहना क्यों करता है मनमानी जिन्दगी.....

भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला सब है स्वप्न की लीला,
कोई अन्त सहाय ना होगा – भवसागर गहरा पानी
अब मान मेरा कहना क्यों करता है मनमानी जिन्दगी.....

कर यतन योग युक्ति का हो जाए जतन मुक्ति का
अभ्यास जो नित तू करेगा – मिटे जन्म मरण की कहानी
अब मान मेरा कहना क्यों करता है मनमानी जिन्दगी.....

जो सद्गुरु शरण आयेगा, यम त्रास से बच जायेगा
वरना फिर पछतायेगा, तू पहचान गुरु की वाणी
अब मान मेरा कहना क्यों करता है मनमानी जिन्दगी.....

मोह पाश का ये बन्धन है, तू तो सत चित आनन्द है
सुधा नाथ करे वन्दन है मेरे सदगुरु है परम ज्ञानी
अब मान मेरा कहना क्यों करता है मनमानी जिन्दगी.....

भजन–39

टेक – सोहंग बानी समझ रे प्राणी बीती जा जिन्दगानी बता क्यों भटक रहा है बता क्यों भटक रहा है।

तन का अभिमान ना कर तज विषयों की सब आस रे
गिने गिनाए मिले इक्कीस हजार छः सौ श्वास रे
आठ पहर तू अजया जप तेरी हो जा अमर निसानी
बता क्यों भटक रहा है बता क्यों भटक रहा है
सोहंग बाणी समझ रे प्राणी बीती जा जिन्दगानी
बता क्यों भटक रहा है.....

साधन सम्बन्ध और आकर्षण धन धाम झूठा करे गुमान है
हर समय आनन्द में रहना ये ही सच्चे ज्ञानी की पहचान है
मैं मेरी में उलझ रहा क्यों दी दिन की ये कहानी है
बता क्यों भटक रहा है बता क्यों भटक रहा है
सोहंग बाणी समझ रे प्राणी दो दिन की जिन्दगानी बात क्यों.....

अमृत रस झरे अन्तर में कर पान रे,
समझ पड़ेगी धर अलख पुरूष का ध्यान रे
चन्द रोज का ये जग मेला कब उड़ जा हंस
सैलानी–बता क्यों भटक रहा है बता.....

सोहंग बाणी समझ रे प्राणी दो दिन की जिन्दगानी बता क्यों भटक.....

अनहद धुन बाजे कर चिन्तन बार-बार तू
सदगुरु शरण में आजा हो जाएगा भव से पार तू
सुधा नाथ कह मिले मोक्ष मिटे जन्म मरण की कहानी
बता क्यों भटक रहा है बता क्यों भटक रहा है
सोहंग बाणी समझ रे प्राणी दो दिन की जिन्दगानी बता क्यों भटक.....

भजन-40

टेक - कर दया हे सदा शिव-सभी जीवों पर
भव बन्धन मिटे, वे पद पावे अमर

श्रद्धा विश्वास के रूप तुम्ही, अध्यात्म का है मूल ये ही
हे निर्गुण सगुण हे प्राणेश्वर, कर दया हे सदाशिव सभी जीवों पर भव बन्धन मिटे.....

सृष्टि का मूल आधार कहां, ब्रह्मादि ना पहुँचे काल जहां
हे ज्योति रूप हे विश्वेश्वर,कर दया हे सदाशिव सभी जीवों पर भव बन्धन मिटे.....

भावी को मिटाने वाले विभु, दूजा कोई और नहीं है प्रभु
हे कृपा सिन्धु हे लोकेश्वर, कर दिया है सदाशिव सभी जीवों
पर भव बन्धन मिटे.....

माया से भ्रमित हो भटक रहा, सदियों से भंवर में अटक रहा
अब करदो पार हे मुक्तेश्वर, कर दया हे सदाशिव सभी जीवों
पर भव बन्धन मिटे.....

है द्वारा तुम्हारा सभी के लिए, सुर–असुर को मन चाहे वर दिए
जो भी आया शरण है महेश्वर, कर दया हे सदाशिव सभी
जीवों पर भव बन्धन मिटे.....

पापों से धरा अकुलाने लगी, दीन भक्तों ने मिलकर पुकार करी
आओ हर–हर भोले नाथ है भूतेश्वर, कर दिया हे सदा शिव
सभी जीवों पर भव बन्धन मिटे.....

चिन्तन की धार नित बहती रहे, सुधानाथ अनवरत चलती रहे
हे योगी राज हे योगेश्वर, कर दया हे सदा शिव सभी जीवों
पर भव बन्धन मिटे.....

भजन–41

टेक – श्री गोरक्ष नाथ योगी हो सब जग के दाता शरण में पड़े हैं सिद्धनाथ

चाहे योगी हो या तपस्वी या ज्ञानी, त्यागी वैरागी या हो भक्त ध्यानी
सभी ने झुकाया तेरे दर पर माथा–शरण में पड़े हैं.....
शिव गोरक्ष योगी हो सब जग दाता शरण में पड़े हैं सभी सिद्धदाता

हो घट घट में व्यापक करे आत्म पूजा
शिवा आपके कोई देव ना दूजा जो सुमरे तुम्हे नित गर्भ में ना आता
शरण में पड़े हैं सिद्धदाता शिव गोरक्ष योगी हो सब जग के दाता शरण में पड़े हैं सभी सिद्धदाता

अगम अगोचर हो अलख निरन्जन सुर नर मुनि सब ही करते हैं वन्दन स्वरूप तुम्हारा लखन में ना आता–शरण में पड़े है सिद्धदाता
शिव गोरक्ष योगी हो सब जग के दाता शरण.....

सार सभी ग्रंथों का है ये ही, चाहोगे मिलेगा उसी रूप में ही
सुधा नाथ निर्गुण सगुण जो भी भाता – शरणमें पड़े है.....
शिव गोरक्ष योगी हो सब जग के दाता शरण में पड़े हैं सभी सिद्धनाथा

भजन–42

टेक – हंसा उस देश चलो रे जहां की है महिमा अपरम्पार
जहां की महिमा अपरम्पार, जहां की महिमा अपरम्पार

माया की जहां पहुँच नहीं – नहीं रहता मन का भान
विषयों का विष पान नहीं जहां बरसे अमृत धार
हंसा उस देश चलो रे जहां की महिमा अपरम्पार

पांच तत्व का खेल नहीं – नहीं तीन गुणों का जाल
क्रिया कर्म की बेल नहीं – नहीं शब्दों की झन्कार
हंसा उसी देश चलो रे जहां की महिमा अपरम्पार

अनहद की धुन बाज रही सुन–सुन सुरता रही नाज
रिम झिम रिमझिम हो रही वहां नित नव मंगलाचार
हंसा उस देश चलो रे जहां की महिमा अपरम्पार

है अविचल अविकार अगम वो शून्य लोक का वास
सुधा नाथ योगी जब पहुँचे आनन्द मिले अपार
हंस उस देश चलो रे जहां की है महिमा अपरम्पार

भजन–43

टेक – चलो री सखी सदगुरु के दरबार वो भव से पार लगाते हैं।

तू पांच विषयों ने घेरी, इन्होंने मती फेर दी तेरी
तेरे भ्रम करे सब दूर, सत्य की राह बताते हैं
चलो री सखी सदगुरु के दरबार वो भव से पार लगाते हैं।

तू बन चरणों की दासी कट जाएगी यम की फांसी
तेरा आवागमन मिटाए मोक्ष की राह बताते हैं
चलो री सखी सदगुरु के दरबार वो भव से पार लगाते हैं

अब ना कर पल की देरी, रही बीत उमरिया तेरी
सब दूर करेगें अंधेरी, सत्य की ज्योत जगाते हैं
चलो री सखी सदगुरु के दरबार वो भव से पार लगाते हैं।

तू मान गुरु का कहना फिर निर्भय पद में रहना
कहे सुधा नाथ मन लगाए आप में आप बताते हैं
चलो री सुखी सदगुरु के दरबार वो भव से पार लगाते हैं।

भजन–44

टक – हे महादेव जी हे प्रभु जगपति नाथ जय हो तेरी नाथ जय हो तेरी

भोले शंकर से कहन लगी पार्वती, करो गुरु महिमा का बखान
हे कैलाश पति भोले बाबा ने हंसकर कहा सुनसती, गुरुमहिमा
को समझे वो है शुद्ध मती, सुनो जगदम्बा धन्य है तेरी मती,
हे महादेव जी हे प्रभु जगतपति
नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी

"गु" कार तिमिर उसे कहते है दूर, "रु" कार को जान रहते
भरपूर, अज्ञान को करते है जो चकना चूर, आओ सद्गुरु
शरण जहां झलके नूर, सुनो जगदम्बा तेरी है पावन मती, हे
महादेव जी है प्रभु जगतपति
नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

"गु" शब्द को मानो अंधेरा जहां, "रू" शब्द ब्रह्म रूप
प्रकाश कहां, अज्ञान का आवरण नहीं है यहां, नित परम
प्रकाश रहता है वहां, तुम ध्यान लगाकर सुनो हे सती। हे
महादेव हे प्रभु जगतपति
नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

"गु" कार प्रपंच का प्रकाशी है, "रू" मुक्ति रूप ब्रह्म अविनासी है, वह तो शून्य लोक का वासी है, आनन्द सहंज और सुख रासी है, सुनो जगदम्बा धन्य है तेरी मती, हे महादेव जी है प्रभु जगतपति
नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

अन्त हो ना जाए जब तक इस देह का, सुमरण करते जाओ गुरु शब्द का भान, हो जाएगा अपने निज रूप का, लाभ मिल जाएगा तुझको मुक्ति का, हे भवानी सुनो उसकी हो सदगति, हे महादेव जी है प्रभु जगपति

नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

एक अर्ज नाथ मेरी सुन लीजिए, इतनी सी कृपा मुझ पर कर दीजिए, गुरु हो केसा? ये भी बता दीजिए,
दूर अन्धेरा मन को मेरा कीजिए, धन्य जगदम्बा तेरी है पावन मती,
हे महादेव जी हे प्रभु जगतपति हे महादेव जी हे प्रभु जगतपति,
नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

गुरु निर्मल शान्त चित सदाचारी हो, अक्रोधी मितभाषी अखण्ड व्रत धारी हो, सब संदेहों को निर्मूलन कारी हो, जन्म

मरण के भय को हरण हारी हो, ऐसे गुरु की शरण देती है सद्गति, हे महादेव जी हे प्रभु जगपति
नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

जो शिव स्वरूप में संयुक्त करे, शिष्य के मोह बन्धन को हरे, ऐसे सद्गुरु के चरणों में वन्दन करें, नित्य मुक्त है वो माया से परे, अब ध्यान लगाकर सुनो हे सती, हे महादेव जी हे प्रभु जगपति नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

जिसे परम तत्व का नहीं ज्ञान है, जो नर गुरु दीक्षा से अनजान है, ऐसे मानव जग में पशु समान हैं, धन्य हैं वे करते जो शब्द की पहचान है, सुन जगदम्बा तेरी है पावन मती, हे महादेव जी के प्रभु जगतपति
नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

चित्त शुद्धि का जो अभ्यास करे, अभिमान क्रोध से जो रहता परे, द्वेत भाव गुरु कृपा से जरे, ऐसा हो विधान तो निश्चय तरे, ऐसा प्राणी भव से तरे हे सती, हे महादेव जी है प्रभु जगतपति नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

सत्य कर्मो से दूर रहते जो जन, सदा मृत्यु से भयभीत रह

जिसका मन, करे जो निषिद गुरु का सदा सेवन, पशु योनि मिले, ना मिले मानव तन, अब ध्यान लगाकर सुनो हे सती, हे महादेव जी है प्रभु जगतपति
नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

मैं ही सब हूँ जिसको यह ध्यान है, ऐसा जिसकी कृपा से हुआ ज्ञान है उस आत्म गुरु की जिस पहचान है, ऐसे सद्गुरु को बार-बार प्रणाम है, सुन जगदम्बा तेरी है पावन मती, हे महादेव जी हे प्रभु जगतपति
नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

जो कल्याण कारी आत्म तत्व है , किसी क्रिया के द्वारा नहीं प्राप्त है, सत्य से हो स्वबोध जो पर्याप्त है, ऐसे सिद्ध योगी र्स्वत्र ही व्याप्त हैं, ऐसा विश्वास मन में जगाओ सती, हे महादेव जी हे प्रभु जगतपति
नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

जग में गुरु शिष्य का सार्थक सम्बन्ध है,
मिलावे शिव से जो सत्त चित्त आनन्द है।
सदगुरु करूणा के सागर परमानन्द है।

बस हर घड़ी वहां आनन्द ही आनन्द हैं।
धन्य हे जगदम्बा तेरी है पावन मती, हे महादेव जी हे प्रभु
जगतपति नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी.....

ये है शिव पार्वती संवाद यहां
स्कन्द पुराण में शिव ने सती से है कहा
ऐसी एकात्म पवित्र प्रीत होती है जहां
सुधा बहती है आनन्द की गंगा वहां
तुमने पूछा जो मैंने कहा सब सती
हे महादेव जी है प्रभु जगतपति
नाथ जय हो तेरी, नाथ जय हो तेरी

भजन–45

नदी की शोभा जल से होती, भंवरे की गुंजन से
पुष्प की शोभा खुशबू से,मन की शुभ चिन्तन से।
पण्डित की शोभा विद्या से, योगी की तप संयम से
पुरूष की शोभा शील कहे, नारी की पतिव्रत धर्म से,
सुधा नाथ कहे मानव तन की शोभा होती प्रभु भजन से।

चाहते हो तो

मोक्ष मुक्ति अगर चाहते हो तो,
आस तजो सब विषयन की।
आयु, बल, बुद्धि चाहते हो तो,
शरण में आ सिद्ध सन्तन की।
सुख, सम्पत्ति, यश चाहते हो ता,
करो धर्म जो प्रथम गति धन की।
हृदय में प्रभु का दर्शन चाहते हो तो
गर्व छोड़ शुद्धि कर चित्त मन की।

भजन–46

खान पान पहरान सभी तुझे प्राब्ध के अनुसार बसेरा
यह तन भी तेरे संग चले ना जिसको तू कहता है मेरा
सूक्ष्म स्वरुप की कर विस्मृति देह प्रपंच का बन गया चेरा
काल बली का लगे तमाचा बन जाये पल मैं भस्म का ढेरा
मर कर जीना सीखले गर तू मिट जाए आवागमन का फेरा

करले वासा निरन्तर मैं तज जाति, पाति, उपाधि का सेहरा

धन्य जो रहे लीन ब्रह्म में हुआ अमर नाम दुनिया ने टेरा

सुधा नाथ कहे समझ आपको तेरा सतचित्त आनन्द रूप घनेरा।

भजन–47

टेक – सद्गुरु की आरती होने लगी,

सद्गुरु की आरती होण लगी

प्रेम द्वीप श्रद्धा की बाती, ज्ञान प्रकाश की लौ लागी– सद्गुरु की

सद्गुरु की आरती होण लगी, सदगुरु की आरती होण लगी।

सूक्ष्म थाल में अनगिन मोती, अजपा जप की ज्योत जगी,

सद्गुरु की

सद्गुरु की आरती होण लगी, सदगुरु की आरती होण लगी।

मूल कमल लगा आसान साधा, झिल मिल गगन में होण

लगी सद्गुरु की

सद्गुरु की आरती होण लगी, सदगुरु की आरती होण लगी।

सत्य स्वरूप शब्द एक "ॐ" बिन सुर अनहद नाद बजी – सद्गुरु की

सद्गुरु की आरती होण लगी, सदगुरु की आरती होण लगी।

कोटि देव और सर्वर शक्ति, गुरु सेवा में कर जोड़ खड़ी – सद्गुरु की

सद्गुरु की आरती होण लगी, सदगुरु की आरती होण लगी।

महादेव नाथ शरण थारी आए, सुधा नाथ सोंहग की गूंज उठी – सद्गुरु की

सद्गुरु की आरती होण लगी, सदगुरु की आरती होण लगी।

नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन

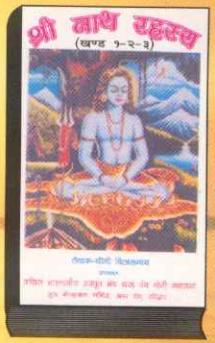

राजा भर्तृहरि श्रृंगार शतक, नीति शतक व वैराग्य शतक तीनों के रचयिता थे। श्री योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। राजा भर्तृहरि ने उज्जैन–मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण कर यहाँ तपस्या की थी। उस समय से यह गुफा व मन्दिर यहाँ विद्यमान है। राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से हर की पैड़ी का निर्माण किया था।

नोट : **हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।**

-: पुस्तक प्राप्ति स्थान :-

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

Visit us at: www.yogigorakshnath.org, e-mail:media@yogigorakshnath.org
Ph. 01334-226583

मुद्रक-शिव शक्ति प्रिन्टर्स, अपर रोड, हरिद्वार।